धर्म आध्यात्म और संसार
DSANSAR NEWS
साप्ताहिक
धर्म आध्यात्म और संसार
sanatantoday.in

• वर्ष-5 • अंक-23 | विक्रम सम्वत: 2082, ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष त्रयोदशी तदानुसार गुरुवार 14 मई 2026 | • पृष्ठ-8 • मूल्य-10 ₹

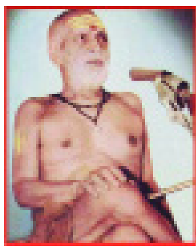

श्री करपात्री स्वामी-उपदेश मनका- 71

आज देश की दुर्दशा धर्मनियन्त्रित राजनीति के न होने के कारण ही है। धर्म के बिना राजनीति विधवा तथा नीति के बिना धर्म विधुर है। (पृ.558)

अखंड भारत
इतिहास तथा संकल्प

सामग्री-स्रोत : अभिनव शंकर' (श्रीकरपात्रीजी-स्मृतिग्रन्थ) संकलन : अंकुर नागपाल (दिल्ली)

श्रीमद् जगतगुरु शंकराचार्य पुरी पठाधीश्वर अनंत श्री निश्चलानंद सरस्वती जी महाराज के चित्रमय दर्शन

विस्तृत समाचार के लिए पृष्ठ 8 का अवलोकन करें

अनुवादक और सम्पादक
श्री गोवर्द्धनमठ-पुरीपीठाधीश्वर-श्रीमज्जगद्गुरु-शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंदसरस्वती

गतांक से आगे

नीति नीधि

'जो अमावास्या, पूर्णिमा, चतुर्दशी, अष्टमी तिथियोंमें, दोनों सन्ध्याओंके समय, आर्द्रा श्रवण तथा जन्म नक्षत्रोंमें, विषुव योगमें स्त्रीसमागमसे बचे रहते हैं; वे मनुष्य स्वर्गमें जाते हैं।।'ज्योतिषके अनुसार जब सूर्यदेव विषुवरेखापर पहुँचते हैं और दिन तथा रात दोनों बराबर होते हैं, तब विषुव योग कहलाता है। ऐसा समय वर्षमें सौर चैत्रमासकी नवमी तिथिको और सौर आश्विनमासकी नवमी तिथिको आता है।

▪ शेष अगले अंक में..

अविद्या और माया के विभेद से परम तत्व में मान्य हैं औपाधिक भेद-पुरी शंकराचार्य

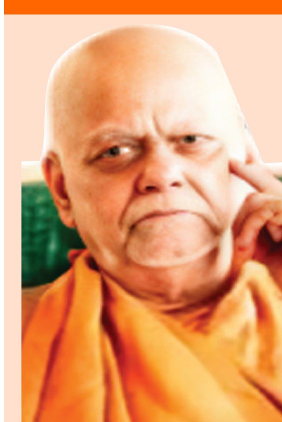

"द्वैत अभिनिविष्ट श्रीमन्माधों का कथन है कि श्रुतियों का तात्पर्य जीवेश्वर के भेद में सन्निहित है , ना कि अभेद में। द्वैत सिद्धि में ही उपनिषदों का विनियोग परिलक्षित है।"

जगद्गुरु संदेश

जीव और ईश्वर की शरीर में विद्यमानता की तुलना करते हुये उद्धृत किया हैं कि दूध का विलोप होने पर दही की प्राप्ति के तुल्य प्रकृति का विलोप होने पर महत् की , महत् का विलोप होने पर अहम् की , अहम् का विलोप होने पर तन्मात्र की तथा तन्मात्रा का विलोप होने पर आकाश आदि पञ्च भूतों की उत्पत्ति सांख्यों को अमान्य है। पञ्च भूतों का पञ्च तन्मात्र में , पञ्च मात्र का अहम् में और अहम् का महत् में तथा महत् का त्रिगुणात्मिका प्रकृति में विलय भी पूर्व - पूर्व कारण की विद्यमानता की दशा में ही सम्भव है। अचित् पदार्थों के चौबीस प्रभेद की सिद्धि भी स्थिति दशा में प्रकृति से पृथ्वी पर्यन्त पदार्थ उपस्थिति के कारण ही सम्भव है। हाँ, प्रकृति का पार्थिव प्रपञ्च पर्यन्त प्रसार जहाँ सर्ग है , वहाँ पार्थिव प्रपञ्च का प्रकृति पर्यन्त समाहार प्रलय रूप प्रति सर्ग है। त्रिगुण की साम्यावस्था का विलोप जहाँ सर्ग है , वहाँ उसकी साम्यावस्था का समर्पण प्रलय रूप प्रतिसर्ग है। द्वैत अभिनिविष्ट श्रीमन्माध्वों का कथन है कि श्रुतियों का तात्पर्य जीवेश्वर के भेद में सन्निहित है , ना कि अभेद में। द्वैत सिद्धि में ही उपनिषदों का विनियोग परिलक्षित है।

संकलनकर्ता-अरविंद तिवारी

▪ शेष अगले अंक में

प्रतिनिधि बनें
रु. 2501/-
+ 11 नए सदस्य बनाएं

रु. 2501/-*
प्रतिनिधि बनें

9303968612 | sanatantoday.in | dsansanews@gmail.com

आपको प्राप्त होगा
- पारदर्शी एवं प्रभावी कार्य हेतु कानूनी अनुबंध
- अधिकृत रूप से कार्य करने हेतु प्रमाण पत्र
- परिचय पत्र-समाचार/वीडिया/ऑडियो/ अन्य सामग्री कवरेज हेतु फोटो परिचय पत्र एवं एनकरिंग माईक
- समाचार/वीडियो/ऑडियो/अन्य सामग्री भेजने हेतु वेब पोर्टल का आईडी-पासवर्ड
- प्रशासनीय एवं तकनीकी समन्वय हेतु 24X7 टीम

आपकी भूमिका, समाज और राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण
✓ धर्म, अध्यात्म और समाज सेवा के क्षेत्र में योगदान
✓ जनता की समस्याओं को उठाने का मंच
✓ सत्य, निष्पक्ष और निर्भीक पत्रकारिता को बढ़ावा
✓ अपने क्षेत्र में विश्वसनीय पहचान
✓ एक सशक्त मीडिया परिवार का हिस्सा बनें

भुगतान करे
punditrkjoshi@oksbi
9303968612@upi

संपादकीय

अध्यात्म 'पारसमणि' है

अध्यात्म निस्संदेह 'पारसमणि' है। जिसने उसे छुआ वह लोहे से सोना हो गया। गुण, कर्म और स्वभाव में महत्तम उत्कृष्टता उत्पन्न करना अध्यात्म का प्रधान प्रतिफल है। जिसकी आंतरिक महानता विकसित होगी, उसकी बाह्य प्रतिभा का प्रखर होना नितान्त स्वाभाविक है और प्रखर प्रतिभा जहाँ कहीं भी होगी, वहाँ सफलतायें और समृद्धियां भी हाथ बांधे सामने खड़ी दिखाई देंगी। लघु को महान् बनाने की सामर्थ्य और किसी के नहीं, केवल अन्तरंग की महत्ता, गुण-कर्म, स्वभाव की उत्कृष्टता में है। इसी को अध्यात्म उगाता बढ़ाता और संभालता है। फलस्वरूप उसे पारस कहने में किसी को कोई आपत्ति नहीं उसे पाकर अन्तरंग ही हर्षोल्लास में निमग्न नहीं रहता, बहिरंग जीवन भी स्वर्ग जैसी आभा से दीप्तीमान होता है। इतिहास का पन्ना-पन्ना इस प्रतिपादन से भरा पड़ा है कि इस तत्त्व-ज्ञान को अपनाकर कितने कलुषित और कुरूप लौह खण्ड स्वर्ण जैसे बहुमूल्य, महान्, अग्रिणी एवं प्रकाशवान् बनने में सफल हुए है। कल्पना की ललक और लचक ही मानव-जीवन का सबसे बड़ा आकर्षण है। कल्पना लोक में उड़ने वाले ही कलाकार कहलाते हैं। सरसता नाम की जो अनुभूतियाँ हमें तरंगित, आकर्षित एवं उल्लसित करती हैं, उसका निवास कल्पना क्षेत्र में ही है। भावनाओं में ही आनंद का उद्गम है। आहार निद्रा से लेकर इन्द्रिय तृप्ति तक की सामान्य शारीरिक क्रियाएँ भी मनोरम तब लगती हैं, जब उसके साथ सुव्यवस्थित भाव कल्पना का तारतम्य जुड़ा हो, अन्यथा वे नीरस एवं भार रूप क्रिया-कलाप मात्र बनकर रह जाती हैं। उच्च कल्पनाएँ अभाव-ग्रस्त, असमर्थ जीवन में भी आशायें और उमगें संचारित करती रहती हैं। संसार में जितने शरीर सम्पर्क से उत्पन्न सुख है, उससे लाख करोड़ गुना कल्पना, विचारणा एवं भावना पर अवलम्बित है। उस दिव्य संस्थान को सुव्यवस्थित करने और परिस्थितियों के साथ ठीक तरह तालमेल मिला लेने की पद्धति का नाम 'अध्यात्म' है।

• पं श्रीराम शर्मा

आयुर्वेद

गतांक से आगे

स्वस्थ जीवन और चिकित्सा संसार

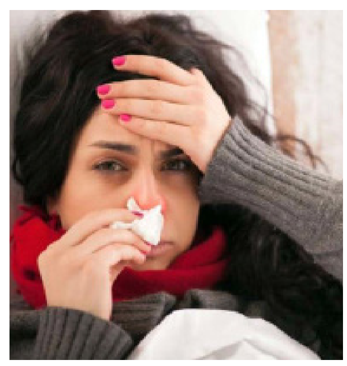

सर्दियों में स्वस्थ रहने के उपाय

सर्दी के मौसम में सर्दी के असर से बचने के लिए लोग गर्म कपड़ों का इस्तेमाल करते हैं, लेकिन शरीर को चाहे कितने ही गर्म कपड़ों से ढक लिया जाए ठंड से लड़ने के लिए बॉडी में अंदरूनी गर्मी होनी चाहिए। शरीर में यदि अंदर से खुद को मौसम के हिसाब से ढालने की क्षमता हो तो ठंड कम लगेगी और कई बिमारियां भी नहीं होंगी। यही कारण है कि ठंड में खान पान पर विशेष रूप से ध्यान देने को आयुर्वेद में बहुत महत्त्व दिया गया है। सर्दियों में यदि खानपान पर विशेष ध्यान दिया जाए तो शरीर संतुलित रहता है और सर्दी कम लगती है। आपके लिए इस मौसम की उपयोगी टिप्स खाएं ये चीजें, इनसे मिलती है शरीर को शक्ति और गर्मी

2. डॉ. मॉस ने विभिन्न व्यक्तियों के बीच ऊर्जा के परस्पर विनिमय को जाँचने के लिए किर्लियन फ़ोटोग्राफ़ी का अध्ययन किया। एक प्रयोग में दो व्यक्तियों को एक-दूसरे की आँखों में तब तक देखने के लिए कहा गया जब तक उन दोनों के बीच गहराई से सम्बद्ध होने का भाव न उत्पन्न हो जाये। इस प्रकार जब सम्बन्ध स्थापित हो गया तब उन दोनों की अंगुलियों के पोरों का चित्र उतार लिया गया। लेकिन एक व्यक्ति की अंगुलियों के पोरों का चित्र गायब था। हमारे दैनिक जीवन के पारस्परिक कार्य-संपादनों और भावनाओं एवं समानुभूतिक-असमानुभूति संवेदनाओं के अध्ययन के लिए महत्त्वपूर्ण आशय वाला एक रोचक अवलोकन है।

3. जब सुविख्यात अमरीकी आत्मिक एवं प्राणिक उपचारक डॉ. ओल्गा वोरॉल का चित्र लिया गया तो पाया गया कि उनमें इच्छानुसार ऊर्जा को नियंत्रित करने की क्षमता थी। ऐसा देखा गया है कि सामान्य लोगों की तुलना में उपचारकों का प्रभामण्डल असाधारण रूप से बड़ा होता है।

वर्ष 1978 में रोमानिया के वैज्ञानिकों ने शरीर को स्कैन करने की विधि का विकास किया, जिसे इलेक्ट्रोनोग्राफ़ी कहा गया। यह किर्लियन विधि के समान होते हुए भी उससे अधिक विकसित है।

इसमें श्याम-श्वेत चित्रांकन से लेकर रंगीन वीडियो टेप बनाने की सुविधाएँ हैं। एक विशेष उच्च वोल्टेज वाले क्षेत्र से विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र उत्पन्न होता है जिसे परिवर्तित कर चित्र लिये जाते हैं। बुखारेस्ट के 'लेबर प्रोटेक्शन एण्ड हाइजीन सेन्टर' में 6000 से अधिक लोगों की इलेक्ट्रोनोग्राफ़ी की गयी। वहाँ प्रयोगात्मक अध्ययनों से यह प्रकट हुआ कि इसके द्वारा स्वस्थ एवं रोगग्रस्त ऊतकों का पता लगाना संभव है। प्रकाश की तीव्रता में परिवर्तन आ जाता है। उदाहरण के लिए, सूजन की स्थिति में रंग गहरा होता है, जबकि कैंसर की स्थिति में रंग हल्का रहता है। प्रभामण्डल के द्वारा रोग के लक्षणों को ज्ञात करने की विधि का प्रयोग कर यह आशा की जा रही है कि रोगों की रोकथाम और उपचारात्मक चिकित्सा के क्षेत्रों का विस्तार होगा।

विगत वर्षों में रूस के 'सेंट पीटर्सबर्ग स्टेट टेक्निकल यूनिवर्सिटी ऑफ़ इन्फ़ॉर्मेशनल टेक्नोलॉजी, मेकैनिक्स एण्ड ऑप्टिक्स' के डॉ. कॉन्टेन्टिन कोरोत्कॉव ने जी.डी.वी. कैमरा बनाया है

• शेष अगले अंक में

▪ **अशोक खंडेलवाल**
एम. काम, आयु रत्न

वार्षिक सदस्यता शुल्क 520/- रुपए + उज्जैन (म.प्र.) एवं प्रयागराज (उ.प्र.) से बाहर के पाठकों हेतु डाक शुल्क अतिरिक्त (520+260/-)=780/- प्रतिवर्ष के भुगतान के साथ अपना पत्राचार का पूर्ण पता मय मोबाइल नं. के ईमेल dsansarnews@gmail.com या मोबाईल नं. 9303968612 पर व्हाट्सअप करें।
Bank account number 53016338926
IFSC CODE SBIN00030108

प्रयाग संस्करण

कार्यकारी संपादक : आदेश भूषण पांडे | मोबाईल नंबर 91409 98956

हिन्दू राष्ट्र अभियान निमित्त सप्ताहिक श्री हनुमान चालीसा पाठ,संकीर्तन प्रकल्प

हिन्दू राष्ट्र अभियान आदित्य वाहिनी सिंहगढ़ कवर्धा

हिन्दू राष्ट्र अभियान आदित्य वाहिनी खैरबना बैमेतरा

हिन्दू राष्ट्र अभियान आदित्य वाहिनी बिलासपुर

हिन्दू राष्ट्र अभियान आदित्य वाहिनी राजनादगाँव

हिन्दू राष्ट्र अभियान आदित्य वाहिनी पथरी खैरागढ़

हिन्दू राष्ट्र अभियान आदित्य वाहिनी कोंगिया बेमेतरा

हिन्दू राष्ट्र अभियान आनंद वाहिनी बिलासपुर

हिन्दू राष्ट्र अभियान आदित्य वाहिनी पिपरिया

हम भारत भव्य बनाएंगे हम हिन्दू राष्ट्र बनाएंगे

पूर्व विदित है कि आदित्य वाहिनी कवर्धा द्वारा राष्ट्र उत्कर्ष हेतु मंगलवार को सीताराम संकिर्तन हनुमान चालीसा पाठ किया जाता हैं। गुरुदेव भगवान के प्रेरणा से भारत राष्ट्र अतिशीघ्र हिन्दू राष्ट्र घोषित हो एवम् गौ हत्या पूर्णतः बंद हो इस पावन संकल्प से आदित्य वाहिनी कवर्धा संगठन द्वारा घर-घर संवाद हर घर हनुमान चालीसा पाठ प्रकल्प चलाया जा रहा है। अतः इसी क्रम में आदित्य वाहिनी कवर्धा के द्वारा संगठन का विस्तार के उद्देश्य से दिव्य प्रकल्प का आयोजन विभिन्न स्थानों पर संपन्न हुआ जिसमें गोष्ठी के माध्यम से आदित्य वाहिनी के उद्देश्यों के अनुसार प्रकल्प का संचालन करने एवं अधिक से अधिक लोगों को आदित्य वाहिनी के सैनिक बनने हेतु एवं प्रत्येक परिवार से प्रतिदिन एक रुपए और सवा घंटे के प्रकल्प में शामिल होने के लिए आह्वान किया गया जिसमें दोनों गांव में अधिक संख्या में लोगों ने भाग लिया और अभियान में जुड़ने का संकल्प लिया यह पावन प्रकल्प श्री मारुति शरण शर्मा जी के मार्ग दर्शन एवं नीलू साहू जी के समन्वय में हुआ जिसमें कुलेश्वर सिंह राजपूत अध्यक्ष आदित्यवाहिनी कवर्धा मोनू ठाकुर कवर्धा मध्य क्षेत्र प्रमुख एवं संतोष ठाकुर जी सांस्कृतिक प्रमुख के साथ शहर के सभी गणमान्य व्यक्तियों के साथ गुरुदेव के दीक्षित भक्त भी उपस्थित रहें ।

ऋग्वेदीय पूर्वाम्नाय श्रीगोवर्धनमठ पुरीपीठाधीश्वर अनंतश्रीविभूषित श्रीमज्जगद्गुरु शङ्कराचार्य स्वामी श्रीनिश्चलानंद सरस्वती जी महाभाग द्वारा विरचित पीठ परिषद, आदित्य वाहिनी, आनंद वाहिनी की अजस्र परंपरा से प्रवाहित अनुसरणी में श्री हनुमान चालीसा पाठ एवं संगोष्ठी संपन्न हुआ। कार्यक्रम में पीठ परिषद, आदित्य वाहिनी, आनंद वाहिनी के सभी सदस्य एवं सनातन वैदिक हिन्दू धर्मावलंबी उपस्थित रहे।

कार्यक्रम की रूप रेखा इस प्रकार रही ।

(१) श्रीगुरु पूजन

(२) भगवन्नाम संकीर्तन एवं हनुमान चालीसा का सामूहिक पाठ

(३) सनातन मानबिंदुओं का संरक्षण एवं अखण्ड भारत की परिकल्पना

(४) संगठन की समीक्षा एवं सेवा प्रकल्प

प्रतिनिधि बनें
रु. 2501/-
+ 11 नए सदस्य बनाएं
9303968612 | sanatantoday.in | dsansanews@gmail.com

रु.2501/-*
प्रतिनिधि बनें

आपको प्राप्त होगा
पारदर्शी एवं प्रभावी कार्य हेतु कानूनी अनुबंध
अधिकृत रूप से कार्य करने हेतु प्रमाण पत्र
परिचय पत्र-समाचार/वीडिया/ऑडियो/ अन्य सामग्री कवरेज हेतु फोटो परिचय पत्र एवं एनकरिंग माईक
समाचार/वीडियो/ऑडियो/अन्य सामग्री भेजने हेतु वेब पोर्टल का आईडी-पासवर्ड
प्रशासनीय एवं तकनीकी समन्वय हेतु 24X7 टीम

आपकी भूमिका, समाज और राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण
✓ धर्म, अध्यात्म और समाज सेवा के क्षेत्र में योगदान
✓ जनता की समस्याओं को उठाने का मंच
✓ सत्य, निष्पक्ष और निर्भीक पत्रकारिता को बढ़ावा
✓ अपने क्षेत्र में विश्वसनीय पहचान
✓ एक सशक्त मीडिया परिवार का हिस्सा बनें

भुगतान करे
punditrkjoshi@oksbi
9303968612@upi

श्रीशिवरहस्याख्य:

प्राचीन ज्ञान विज्ञान को जनसामान्य को सहजता से उपलब्ध कराने के उद्देश्य हेतु कटिबद्ध प्रयासों से दक्षिण भारत में सुप्रचलित ग्रंथ "श्री शिव रहस्यम" को संपूर्ण भारतवर्ष में हिंदी भाषा में एक श्रृंखला के रूप में क्रमबद्ध प्रसारित किए जाने का प्रयास संस्कृत और हिंदी भाषा के विद्वान श्री अंकुर जी नागपाल की अनुपम प्रस्तुति :

गतांक से आगे

जिनके स्वरूप को न जानने से इन्द्रियों को आत्मा माना जाता है और अज्ञान के कारण ही पंचभूतों को आत्मा मान लिया जाता है ॥13॥ जिनके स्वरूप के ज्ञान के अभाव में इस दृश्य जगत् को ही आत्मा मान लिया जाता है; आकाश जिनका शरीर है, किन्तु वह आकाश भी उन्हें नहीं जानता ॥14॥ पृथ्वी जिनका स्वरूप है, किन्तु वह पृथ्वी भी उन्हें नहीं जानती; जो मन और चक्षु आदि इन्द्रियों के नियन्ता परमेश्वर हैं ॥15॥ जिनके प्रकाश से यह समस्त जगत् प्रकाशित होता है और इन्द्र, अग्नि एवं वायु आदि जिनके भय से ही अपने-अपने कार्यों में प्रवृत्त रहते हैं, वे चेतनों में परम चेतन हैं ॥16॥ यह चराचर जगत् जिनकी माया का विलास है, वे माया के स्वामी परम ईशान हैं और उन्हीं के द्वारा यह सारा जगत् व्याप्त (आच्छादित) है ॥17॥ वे शरीररहित और लिंग (चिह्न) से रहित होने पर भी योगियों द्वारा देखे जाते हैं; जिनके केवल विज्ञान मात्र से सब कुछ विज्ञात हो जाता है ॥18॥

ज्ञान ही आत्मा है और 'मैं ब्रह्म हूँ'--ऐसा ज्ञान ही परम शांति है। वे एक ही परमात्मा सत्य हैं, यहाँ नानात्व (भेद) लेशमात्र भी नहीं है ॥19॥ वे एक ही ज्ञानवान् ईश्वर अपनी शक्तियों (ईशनी) के द्वारा शासन करते हैं; वे एक ही महारुद्र पुरुष हैं जिनका मुख सब ओर है ॥20॥ उस एक ज्ञानस्वरूप आत्मा को त्याग कर यह जगत् जो कुछ भी प्रतीत होता है, वह अन्य ही है; उन शिव के ज्ञान से ही मनुष्यों की हृदय-ग्रन्थि का भेदन होता है ॥21॥ जिनकी एकता का अनुभव करके मनुष्य शोक को पार कर जाता है; वे ही ज्योतियों की ज्योति हैं और वे ही अज्ञानरूपी अंधकार के नाशक हैं ॥22॥ वे एक ही भगवान् अपनी माया से समस्त भूतों में अनेक रूपों में भासित होते हैं; वे जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति अवस्थाओं में छिपे हुए आत्मा के रूप में स्वयं को प्रकाशित नहीं करते (अर्थात् तुरीय हैं) ॥23॥ वे केवल उनकी कृपा से ही सूक्ष्म बुद्धि द्वारा देखने योग्य हैं; वे तपस्या के द्वारा ही जानने योग्य हैं, करोड़ों कर्मों से भी उन्हें अन्य प्रकार से नहीं जाना जा सकता ॥24॥ जो वेदों के आदि में 'ओंकार' (स्वर) के रूप में कहे गए हैं और वेदान्तों में प्रतिष्ठित हैं, जो समस्त विद्याओं के अधिपति ईशान और सनातन पारद्रष्टा हैं ॥25॥ समस्त भूतों के सो जाने (प्रलय) पर भी जो महेश्वर जागते रहते हैं, जिनसे प्राण और मन उत्पन्न हुए हैं, उनसे परे कुछ भी नहीं है ॥26॥

जो ज्योतियों के भी ज्योतिर्मय देव, विश्वात्मा और विश्वतोमुख हैं; जो पृथ्वी का अतिक्रमण करके स्थित हैं और जिनसे समस्त ब्रह्मादि उत्पन्न हुए हैं ॥27॥ जिनसे ब्रह्मा, विष्णु और इन्द्र समस्त देवताओं सहित उत्पन्न हुए; जो स्वयं ब्रह्म हैं और यहाँ सर्वत्र ब्रह्म रूप में ही व्याप्त हैं ॥28॥

▪ शेष अगले अंक में

संस्कृत भाषा, सनातन देव वाणी एक परिचय

संस्कृत भाषा, सनातन देव वाणी एक परिचय
संस्कृतम्

गतांक से आगे

वैदिक भाषा

1. प्राचीन आर्य भाषा काल (6000 ई. पू. 800 ई. पू.) इस काल में है और प्राचीन संस्कृत भाषा के विकास की प्रक्रिया चलती रही।

2. मध्यकालीन आर्य भाषा काल (800 ई. पू. 1000 ई.) इस काल में पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश भाषाओं का विकास हुआ। शिक्षित समाज में संस्कृत का प्रयोग होता रहा तथा अधिकांश प्रामाणिक ग्रन्थ इसी समय में लिखे गए। इस काल में जन-सामान्य में संस्कृत भाषा का प्रयोग बहुत अधिक नहीं रहा, किन्तु इसके प्रति सम्मान का भाव पूर्ववत् बना रहा।

3. आधुनिक आर्य भाषा काल (1000 ई. अब तक) इस काल में विभिन्न प्रदेशों में बोली जाने वाली अपभ्रंश-भाषाओं से आधुनिक आर्य भाषाओं का विकास हुआ। द्रविड़ परिवार की भाषाओं को छोड़कर हिन्दी, मराठी आदि उपर्युक्त सभी भाषाएँ इसके अंतर्गत हैं। इन सभी भाषाओं में पर्याप्त साहित्य रचा गया। इस काल में भी संस्कृत भाषा द्वितीय युग के समान शिक्षित जनसमुदाय में प्रचलित रही, इसमें रचनाएँ भी होती रहीं। प्रादेशिक भाषाओं में भी मुख्यतः ग्रन्थ-लेखन का कार्य उन्हीं लोगों ने किया, जो संस्कृत के पण्डित थे, क्योंकि संस्कृत भाषा के अभाव में शिक्षा की कल्पना ही नहीं हो सकती थी। इस काल में विदेशी शासन का आरम्भ हुआ, जिससे तुर्की, अरबी और फारसी भाषाएँ भारत में शासकों द्वारा लाई गईं। इनका रूप प्राप्त होता है, उसमें सरलीकरण की प्रवृत्ति दिखाई देती है। शब्दरूपों और धातुरूपों की अनियमितता तथा अनेकता क्रमशः दूर होती जाती है। अन्य वेदों में हमें गद्य भी मिलता है, जबकि पूरी ऋग्वेद-संहिता पद्यात्मक है। संहिताओं के बाद उनकी व्याख्याओं के रूप में ब्राह्मण, आरण्यक तथा उपनिषद् ग्रन्थ प्राप्त होते हैं। यद्यपि इन सब में सामान्य रूप से वैदिक संस्कृत ही प्रयुक्त है, किन्तु वह संस्कृत लौकिक संस्कृत की ओर अभिमुख दिखाई पड़ती है।

वैदिक संस्कृत और लौकिक संस्कृत के सन्धिकाल में हमें रामायण तथा महाभारत जैसे ग्रन्थ मिलते हैं। इन ग्रन्थों की भाषा में वैदिक वाक्यों जैसी सरलता है तथा जटिल शब्दरूपों का अभाव है। इन ग्रन्थों की भाषा ने लौकिक संस्कृत साहित्य को विकास का मार्ग दिखाया। इसी काल में संस्कृत व्याकरण के सुप्रसिद्ध लेखक पाणिनि का आविर्भाव हुआ, जिन्होंने अपने समय में प्रचलित संस्कृत भाषा का व्यापक अनुशीलन करके अष्टाध्यायी नामक ग्रन्थ में भाषा-सम्बधी नियम बनाए।

उन्होंने तुलना के लिए वैदिक भाषा के विषय में भी अपने निष्कर्ष को सूत्र-रूप में उपस्थित किया। पाणिनि ने वेदों की भाषा को सामान्य रूप से छन्दस् और लौकिक संस्कृत को केवल भाषा कहा है। पाणिनि के बाद विकसित संस्कृत साहित्य में उसी भाषा का उपयोग होने लगा। कवियों और लेखकों की शैली में जो भी अन्तर रहा हो, भाषा वही रही। अन्य वैयाकरणों ने भी पाणिनि के द्वारा स्थापित भाषा को ही मानक स्वीकार कर अपने-अपने व्याकरण लिखे।

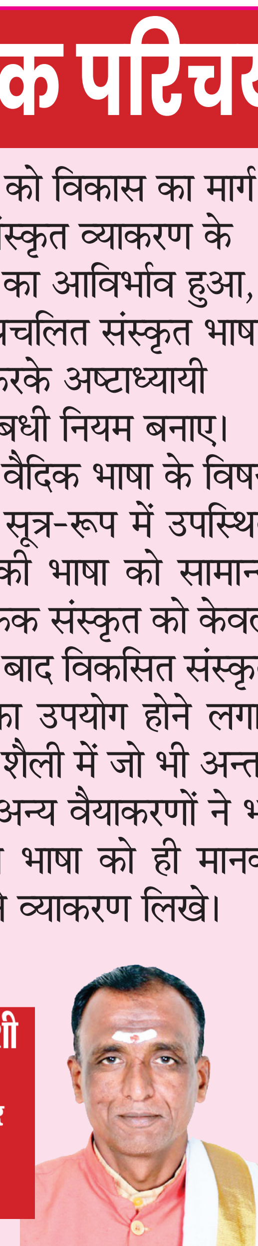

पंडित रजनीश रामकृष्ण जोशी
एम.ए. (संस्कृत)
कृपा पात्र शिष्य, पुरी पीठाधीश्वर
श्रीमदजगतगुरु अनंत
श्री निश्चलानंद जी सरस्वती।

▪ शेष अगले अंक में

वार्षिक सदस्यता शुल्क 520/- रुपए + उज्जैन (म.प्र.) एवं प्रयागराज (उ.प्र.) से बाहर के पाठकों हेतु डाक शुल्क अतिरिक्त (520+260/-)=780/- प्रतिवर्ष के भुगतान के साथ अपना पत्राचार का पूर्ण पता मय मोबाइल नं. के ईमेल dsansarnews@gmail.com या मोबाईल नं. 9303968612 पर व्हाट्सअप करें।
Bank account number 53016338926
IFSC CODE SBIN00030108

सुखमय जीवन का सनातन सिद्धांत

जगतगुरु स्वामी श्री निश्चलानंद जी सरस्वती

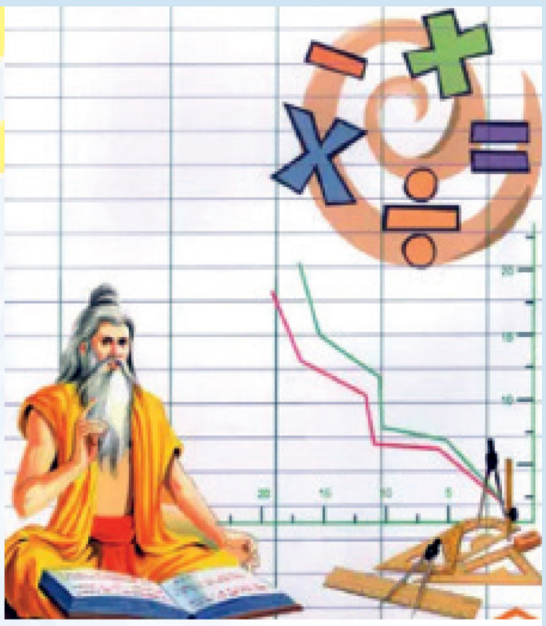

(६) सुखोपलब्धिका रहस्य - सुखस्वरूप आत्माकी शुद्ध और समाहित अन्तःकरणपर अभिव्यक्ति - 'सबमें आत्माके लिए प्रीति और सबके लिए आत्मामें अप्रीति' आत्माको परम प्रेमास्पद सिद्ध करती है। आत्माकी परमप्रेमास्पदता आत्माको परमानन्दस्वरूप सिद्ध करती है। ऐसी स्थितिमें आत्माकी परमानन्दरूपताकी अभिव्यक्तिके उपयुक्त अन्तःकरणकी निर्मल-निश्चलदर्पणतुल्यस्थिति सुखोपलब्धिका रहस्य है। तमोगुण और रजोगुणकी प्रबलतासे चित्त मलयुक्त और विक्षिप्त (चञ्चल) होता है, अत एव जीवन दुःख और दैन्यके वशीभूत होकर विनाशकी ओर उन्मुख और अग्रसर होता है। यही कारण है कि युक्ताहार-विहार और युक्त-युक्त सर्वथा उपयुक्त सकल व्यवहारके द्वारा जीवनको संयत रखना परमावश्यक है।

(७) पूर्वजन्म और पुनर्जन्मादिकी सिद्धि :-मनुष्य -पश्वादि-परस्परविलक्षण-विविध शरीरोंमें जन्म तथा जन्मकालसे ही दुग्धपानादिकी कलामें कुशलतासे सम्पन्न सुखप्रद - दुःखप्रद विविध झंझावातोंसे भरपूर जीवन पूर्वजन्मका अनुमापक है। अभुक्त कर्मोंके फलस्वरूप पुनर्जन्मका भी अनुमान होता है। लोकमें उद्भिज्ज, स्वेदज, अण्डज और जरायुज प्राणियोंमें एवं कालापानी और काश्मीर आदि भूभागों में तारतम्य तथा मनुष्य, गन्धर्व, पितर और देवों में उत्कर्षापकर्षका तारतम्य लोक लोकान्तरोंमें जीवके गमनागमन अर्थात् पूर्वजन्म, पुनर्जन्म और उत्क्रमणके पोषक हैं। अनादिप्रवाह युक्त जीवों के शुभाशुभ कर्मों को निमित्त बनाकर सर्वेश्वर द्वारा स्वयंको यान्त्रिकतुल्य निमित्त और धातु (मैटर) तुल्य उपादानरूपसे प्रस्तुतकर यह जगत् बनाया गया है। इसमें गंगा, गाय, गायत्री (वेद) आदि तारक सामग्रियाँ और गन्दानाला, गधा, अश्लीलगाथा आदि मारक सामग्रियाँ हैं। बुद्धिमान् मारक सामग्रियोंका भी तारक सामग्रियोंके सदृश प्रयोग करनेमें दक्ष होते हैं।

(८) अस्तिक-नास्तिकसम्मत निर्धनताके हेतु और निर्धनतानिराकरणके उपाय - पूर्वजन्म, उत्क्रमण और पुनर्जन्मादिमें आस्था रखनेवाले और श्रीभगवान्को ही जगत्का अभिन्ननिमित्तोपादानकारण माननेवाले महानुभाव 'वसुधैव कुटुम्बकम्' (महोपनिषत् ६.७१), 'अमृतस्य पुत्राः' (श्वेताश्वतरोपनिषत् २.५), 'सर्वं खल्विदं ब्रह्म' (छान्दोग्योपनिषत् ३.१४.१) -'सम्पूर्ण पृथ्वी ही कुटुम्ब है', 'अमृतस्वरूप परमात्माके सभी पुत्र हैं', 'निःसन्देह यह सब ब्रह्म है' की उदात्तभावनाको आदर्श मानते हैं। वे भूमण्डलपर व्याप्त निर्धनताके आठ हेतु मानते हैं -

(१) श्रमके प्रति अरुचि, (२) कृषि आदिके उपयुक्त साधनोंकी न्यूनता (३) सामग्री संकलन और सुलभ सामग्रियोंके उपयोगसे गरीबी उन्मूलनके उपयुक्त प्रशिक्षणकी न्यूनता, (४) शोषणकी परम्परा अर्थात् स्वयंको धनाढ्य बनानेके लिए सहस्रों व्यक्तियोंके शोषणकी परम्परा, (५) महायन्त्रोंद्वारा सहस्रों व्यक्तियोंके द्वारा सम्पन्न होने योग्य कार्यको कतिपय (चन्द) व्यक्तियोंके द्वारा सम्पन्न करनेकी विधा, (६) मादक द्रव्योंकी दासता और विलासिता,(७) धर्म और ईश्वरसे विमुखता और (८) प्रारब्ध (दैव) की दुर्बलता उक्त अष्टविध हेतुओंमें प्रारम्भके छह हेतु आस्तिक-नास्तिक उभयसम्मत होनेसे सार्वभौम हैं। अन्तिम दो हेतु विशद प्रज्ञासे समझने योग्य हैं।

▪ शेष अगले अंक में...

विश्व सदैव ऋणी रहेगा गोवर्द्धनमठ के 143 वे शंकराचार्य जी स्वामी श्री भारतीकृष्ण तीर्थजी महाराज और वर्तमान शंकराचार्य स्वामी निश्चलानन्द सरस्वती जी का जिन्होंने वेदिक गणित को संसार के लिए सुलभ किया। पूर्ण रूप से शंकराचार्य के मूल कर्त्तव्य का निर्वहन किया जिसमें

- ✓ कालक्रम से विलुप्त ज्ञान विज्ञान को प्रकट करना।
- ✓ विकृत ज्ञान विज्ञान को विशुद्ध करना।
- ✓ सूत्र शैली में प्राप्त ज्ञान को विशद करना।

आक्षेपपरिहार तथ्यप्रकाश

रचयिता-श्री गोवर्द्धनमठ-पुरीपीठाधीश्वर-श्रीमज्जगद्गुरु- शंकराचार्यस्वामी निश्चलानंदसरस्वती

गतांक से आगे

'सर्वेषां मङ्गलं भूयात्' (गरुडपुराण २.३५.५१; भविष्यपुराण २.३५.१४), 'सबका मङ्गल हो', 'स्वस्त्यस्तु विश्वस्य' (श्रीमद्भागवत ५.१८.९) 'विश्वका कल्याण हो', 'आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्' (पद्मपुराण, सृष्टि. १९.३५५, विष्णुधर्मोत्तर. ३.२५३.४४)-'देहात्मवादके आधारपर आध्यात्मिक प्रशस्त प्रक्रमका उपहास अज्ञानका विचित्र विलास और प्रज्ञापराध ही है ।

सनातन-वैदिक-आर्य-हिन्दुधर्ममें फलचौर्य नहीं है। अपने-अपने अधिकारकी सीमामें स्वकर्माचरणके द्वारा सच्चिदानन्दस्वरूप सर्वेश्वरकी समर्चाकर सबको सद्गति, संसिद्धि और सुख-शान्तिकी समुपलब्धि सम्भव है।

'स्वे स्वे कर्मण्यभिरतः संसिद्धिं लभते नरः।।'
(गीता १८.४५)

'स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धिं विन्दति मानवः।।'
(गीता १८.४६)

ध्यान रहे ; ब्राह्मण भी राजसूय यागमें, वैश्यस्तोममें तथा रथकारेष्टि आदिमें अधिकृत नहीं हैं। क्या यह उनके प्रति अन्याय है ? भ्राता तथा भगिनीका विवाह मर्त्यलोक ही नहीं, देवलोकमें भी विहित नहीं है। यह क्या अनर्गलप्रलाप है ?

▪ शेष अगले अंक में...

वार्षिक सदस्यता शुल्क 520/- रुपए + उज्जैन (म.प्र.) एवं प्रयागराज (उ.प्र.) से बाहर के पाठकों हेतु डाक शुल्क अतिरिक्त (520+260/-)=780/- प्रतिवर्ष के भुगतान के साथ अपना पत्राचार का पूर्ण पता मय मोबाइल नं. के ईमेल dsansarnews@gmail.com या मोबाईल नं. 9303968612 पर व्हाट्सअप करे।
Bank account number 53016338926
IFSC CODE SBIN00030108

[दोहा ४४]

उभय भाँति तेहि आनहु हँसि कह कृपानिकेत।
जय कृपाल कहि कपि चले अंगद हनू समेत॥

कृपाके धाम श्रीरामजीने हँसकर कहा-दोनों ही स्थितियोंमें उसे ले आओ। तब अंगद और हनुमान्सहित सुग्रीवजी 'कृपालु श्रीरामकी जय हो' कहते हुए चले ॥ ४४ ॥

सादर तेहि आगें करि बानर।
चले जहाँ रघुपति करुनाकर॥
दूरिहि ते देखे द्वौ भ्राता।
नयनानंद दान के दाता ॥1॥

विभीषणजीको आदरसहित आगे करके वानर फिर वहाँ चले, जहाँ करुणाकी खान श्रीरघुनाथजी थे। नेत्रोंको आनन्दका दान देनेवाले (अत्यन्त सुखद) दोनों भाइयों को विभीषणजी ने दूर ही से देखा ॥ १ ॥

बहुरि राम रहेउ ठटुकि एकटक पल रोकी॥
भुज प्रलंब कंजारुन लोचन।
स्यामल गात प्रनत भय मोचन ॥ 2 ॥
छबिधाम बिलोकी।

फिर शोभा के धाम श्रीरामजी को देखकर वे पलक [मारना] रोककर ठिठककर (स्तब्ध होकर) एकटक देखते ही रह गये। भगवान् की विशाल भुजाएँ हैं, लाल कमलके समान नेत्र हैं और शरणागत के भय का नाश करनेवाला साँवला शरीर है ॥२॥

सोहा। मोहा ॥ गाता। बाता ॥ 3 ॥

सिंघ कंध आयत उर आनन अमित मदन मन नयन नीर पुलकित अति मन धरि धीर कही मृदु सिंहके से कंधे हैं, विशाल वक्षःस्थल (चौड़ी छाती) अत्यन्त शोभा दे रहा है। असंख्य कामदेवोंके मनको मोहित करनेवाला मुख है। भगवान्के स्वरूपको देखकर विभीषणजीके नेत्रोंमें [प्रेमाश्रुओंका] जल भर आया और शरीर अत्यन्त पुलकित हो गया। फिर मनमें धीरज धरकर उन्होंने कोमल वचन कहे ॥ ३ ॥

दसानन कर मैं भ्राता।
नाथ निसिचर बंस जनम सुरत्राता।।
सहज पापप्रिय तामस जथा
उलूकहि तम पर देहा। नेहा ॥ 4 ॥

हे नाथ! मैं दशमुख रावणका भाई हूँ। हे देवताओंके रक्षक ! मेरा जन्म राक्षसकुलमें हुआ है। मेरा तामसी शरीर है, स्वभावसे ही मुझे पाप प्रिय हैं, जैसे उल्लूको अन्धकारपर सहज स्नेह होता है ॥४॥

इंजी. पं. हर्ष शुक्ला
बी.ई. (सिविल), पी.जी.डी. (मानवाधिकार)
सामाजिक कार्यकर्ता एवं सलाहकार

▪ शेष अगले अंक में...

रोग और योग

▪ स्वामी कर्मानंद सरस्वती

गतांक से आगे

डॉ. स्वामी कर्मानन्द (डॉ. ली ब्रेडली, एम.बी.बी.एस., सिडनी) का जन्म ऑस्ट्रेलिया में हुआ और उन्होंने सिडनी विश्वविद्यालय में चिकित्सा विज्ञान में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। वे योग चिकित्सा के गहन अध्ययन के लिए सर्वप्रथम 1974 में बिहार योग विद्यालय आये। भारत की यह यात्रा उनके जीवन का एक निर्णायक मोड़ बन गयी और उन्होंने अन्तर्राष्ट्रीय योग मित्र मण्डल अनुसंधान केन्द्र में कार्य करते हुए यहाँ अनेक वर्ष व्यतीत किये। भारत से वापस ऑस्ट्रेलिया जाने पर उन्होंने मेलबर्न में सत्यानन्द योग थैरापी सेन्टर की स्थापना की, और आगामी छः वर्षों तक इस केन्द्र का सफल संचालन भी किया। वर्तमान में ये ऑस्ट्रेलियाई मूल आदिवासियों के बीच रहकर उनकी चिकित्सा सेवा कर रहे हैं।

मुँह का स्वाद बिगड़ जाता है तथा सूँघने की शक्ति में भारी कमी का अनुभव होता है। कदाचित् स्वर यंत्र भी जुकाम की लपेट में आ जाय तो गले में खराश के साथ आवाज भी बैठ जाती है। बहुधा सूजन का दायरा बढ़कर कानों तक फैल जाता है। अतः कभी-कभी सुनने की क्षमता पर भी इसका विपरीत प्रभाव पड़ता है। अक्सर एक-दो

दिनों बाद नासिका प्रवाह बढ़ने लग जाता है, जिसके फलस्वरूप नाक की झिल्लियों की सूजन घट जाती तथा थोड़ी राहत का अनुभव होता है। मरीज अब नाक से श्वास लेने लगता है तथा चार-पाँच दिनों में जुकाम की तीव्रता कम हो जाती है। अधिक गम्भीर मामलों में जब सूजन का क्षेत्र बढ़कर अधःश्वास पथ को प्रभावित करता है तो श्वासनली में उत्तेजना के साथ-साथ खाँसी की भी शिकायत होती है।

गम्भीर जुकाम की जटिलता

यदि आवश्यक सावधानी बरतें और उचित उपचार ले लें तो सामान्यतया साधारण जुकाम के कष्टकर अनुभव नहीं होते हैं। किन्तु यदि व्यक्ति की रोग प्रतिरोधन क्षमता न्यून हो तथा उसका सामान्य स्वास्थ्य औसत से निम्न हो तो जुकाम जटिल रूप धारण कर सकता है। ऐसी अवस्था में शरीर के अन्य अंगों पर उसका दुष्प्रभाव देखा जा सकता है। महामारी के रूप में गंभीर इन्फ्लूएंजा (फ्लू) का बच्चों और वयस्कों पर दुष्प्रभाव स्पष्टतः देखा जा सकता है। जुकाम की सामान्य जटिलताएँ प्रायः निम्नलिखित होती हैं -

- **अनुषंगी विषाणु संक्रमण** - इसके अन्तर्गत स्राव गाढ़े और पीबदार होते हैं।
- **साइनोसाइटिस** - शिरानाल (साइनस) में सूजन एवं अवरोधन के कारण पीतवर्णी पीबदार श्लेष्मा का विसर्जन होता है।
- **मध्यकर्ण संदूषण** - जब नासिका से कानों तक संक्रमण पहुँच जाता है तो ज्वर, बधिरता, कर्णशूल इत्यादि लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।
- **निम्न श्वासनली का संदूषण** - श्वास नली में सूजन, श्वासनली के शोथ, न्यूमोनिया, तथा फेफड़ों के अन्य रोग हो सकते हैं।
- **गंभीर जुकाम का योगोपचार**-आज तक चिकित्सा विज्ञान जुकाम और इन्फ्लूएंजा का कोई कारगर उपचार प्रस्तुत नहीं कर पाया है।

शेष अगले अंक में...

धर्म आध्यात्म और संसार

राष्ट्रीय न्यूज चैनल / राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार पत्र / राष्ट्रीय वेब पोर्टल / राष्ट्रीय डिज़िटल समाचार / यूट्यूब चैनल

धर्म, अध्यात्म क्षेत्र के एक मात्र राष्ट्रीय साप्ताहिक समाचार पत्र की एजेंसी प्राप्त करें, धर्म कार्य के साथ आर्थिक लाभ भी अर्जित करें।

ORIGINAL

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
GOVERNMENT OF INDIA
भारत के प्रेस महापंजीयक
PRESS REGISTRAR GENERAL OF INDIA
पंजीयन प्रमाण–पत्र
CERTIFICATE OF REGISTRATION

प्रमाणित किया जाता है कि **प्रेस तथा नियतकालिक पत्रिका पंजीकरण अधिनियम**, 2023 के अंतर्गत इस नियतकालिक पत्रिका को पंजीकृत कर लिया गया है:
This is to certify that this Periodical has been registered under the **Press and Registration of Periodicals Act, 2023** :

1. शीर्षक Title — धर्म आध्यात्म और संसार DHARM AADHYATMA AUR SANSAR
2. पंजीयन संख्या Registration Number — MPHIN/2021/87156
3. प्रकाशन की भाषा Publication Language — हिन्दी HINDI
4. आवधिकता Periodicity — साप्ताहिक WEEKLY
5. प्रकाशक / Publisher — AKHILESH JOSHI
   पता/Address — 66, VIKRAMADITY MANDIR, YOGIPURA UJJAIN, MADHYA PRADESH
6. प्रकाशन का स्थान Place of publication — 34, BHOJ MARG FREEGANJ, UJJAIN, MADHYA PRADESH
7. मुद्रक / Printer — BHAGWATI DEVI SHARMA
   पता/Address — 44, BAHADURGUNJ, DISTRICT UJJAIN, MADHYA PRADESH
8. मुद्रणालय (नाम एवं पता) Press (Name & Address) — BHAGAWATI OFFSET, 44, BAHADURGUNJ, UJJAIN, MADHYA PRADESH
9. सम्पादक /Editor — AKHILESH JOSHI
   पता/Address — 34, BHOJ MARG FREEGANJ, UJJAIN, MADHYA PRADESH
10. स्वत्वाधिकारी/ Owner Name — AKHILESH JOSHI
    पता/Address — COMP CARE DATA PROCESSORS 34, BHOJ MARG FREEGANJ, UJJAIN, MADHYA PRADESH

दिनांक /Date: 01 MAY 2024

(भूपेन्द्र कैन्थोला / Bhupendra Kainthola)
भारत के प्रेस महापंजीयक
Press Registrar General of India

अपने प्रदेश/जिला/शहर/तहसील के प्रमुख / प्रतिनिधि बनें।

प्रतिनिधित्व का क्षेत्र	सुरक्षा निधि	विज्ञापन व अन्य मद से प्राप्त राशि का प्रबंधन
संपूर्ण राज्य पर	100,000/-	25% प्रधान कार्यालय 75% प्रतिनिधि
महानगर स्तर पर	50,000/-	30% प्रधान कार्यालय 70% प्रतिनिधि
जिला स्तर पर	35,000/-	35% प्रधान कार्यालय 65% प्रतिनिधि
शहरी स्तर पर	25,000/-	40% प्रधान कार्यालय 60% प्रतिनिधि
तहसील स्तर पर	15,000/-	50% प्रधान कार्यालय 50% प्रतिनिधि

* सुरक्षा राशि एक वर्ष पश्चात् पुनः लौटा दी जायेगी। # वापसी नहीं की जावेगी।

1. पारदर्शी एवं प्रभावी कार्य हेतु कानूनी अनुबंधु
2. अधिकृत रूप से कार्य करने हेतु प्रमाण-पत्र
3. परिचय पत्र–समाचार/वीडियो/ऑडियो/ अन्य सामग्री कवरेज हेतु फोटो परिचय पत्र एवं एनकरिंग माईक
4. समाचार/वीडियो / ऑडियो/अन्य सामग्री भेजने हेतु बेव पोर्टल का आई डी-पासवर्ड
5. प्रशासकीय एवं तकनीकि समन्वय हेतु 24x7 टीम

समाचार पत्र में विज्ञापन के रेट / Rate for Advertisement in News Paper

साईज	कलर	दर
फुल पेज 35X25 Cm.	कलर	5000/-
हाफ पेज 17X25 Cm.	कलर	3000/-
क्वार्टर पेज 17X12 Cm.	कलर	1200/-
फुल पेज 35X25 Cm.	ब्लैक एंड व्हाइट	2500/-
हाफ पेज 17X25 Cm.	ब्लैक एंड व्हाइट	1200/-
क्वार्टर पेज 17X12 Cm.	ब्लैक एंड व्हाइट	700/-

समाचार पत्र की प्रतियों प्राप्त करने हेतु

क्र.	समाचार पत्र की प्रतियाँ	प्रतियों का मूल्य
01	1 से 50 प्रतियाँ लेने पर	10.00 रु.
02	51 से 100 प्रतियाँ लेने पर	8.00 रु
03	101 से 150 प्रतियाँ लेने पर	7.00 रु
04	151 से 200 प्रतियाँ लेने पर	5.00 रु
05	201 से 500 प्रतियाँ लेने पर	4.00 रु
06	501 से 1000 प्रतियाँ लेने पर	3.50 रु
07	1000 से अधिक प्रतियाँ लेने पर	3.00 रु

- समाचार पत्र की प्रिंट कॉपी डॉक के माध्यम से मंगवाने हेत निर्धारित शुल्क एडवांस अर्थात एक सप्ताह पूर्व ऑनलाईन खाते में जमा करवाना होंगे।

- क्षेत्र के नियमित शासकीय विज्ञापनों को प्राप्त करें।
- क्षेत्र में संचालित धार्मिक / आध्यात्मिक गतिविधियों को समाचार पत्र के माध्यम से संपुर्ण देश/विदेशों में पहुंचाएं।

Bank account number
53016338926
IFSC CODE

वार्षिक सदस्यता शुल्क 520/- रुपए + उज्जैन (म.प्र.) एवं प्रयागराज (उ.प्र.) से बाहर के पाठकों हेतु डाक शुल्क अतिरिक्त (520+260/-)=780/- प्रतिवर्ष के भुगतान के साथ अपना पत्राचार का पूर्ण पता मय मोबाइल नं. के ईमेल dsansarnews@gmail.com या मोबाईल नं. 9303968612 पर व्हाट्सअप करे।

Bank account number 53016338926
IFSC CODE SBIN00030108

प्रथम पृष्ठ से जारी

श्रीमद् जगतगुरु शंकराचार्य पुरी पठाधीश्वर अनंत श्री निश्चलानंद सरस्वती जी महाराज के चित्रमय दर्शन

"वैदिक परम्परा संवर्धनार्थ"

त्रीदिवसीय संध्यावंदन तथा यज्ञोपवीत कुशपवित्री निर्माण प्रशिक्षण शिविर"

उज्जैन (मध्यप्रदेश)। त्रिदिवसीय निःशुल्क प्रशिक्षण शिविर वैदिक परंपराओं के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु समर्पित है। शास्त्रों में वर्णित संध्या-वंदन को नित्य कर्तव्य (नित्य कर्म) माना गया है, जो मन, वचन और कर्म की शुद्धि का साधन है। यज्ञोपवीत का निर्माण एवं धारण संस्कार का प्रतीक है, जो ब्रह्मचर्य, संयम एवं कर्तव्यबोध की प्रेरणा देता है। कुश-पवित्री का प्रयोग वैदिक अनुष्ठानों में शुद्धता एवं पवित्रता बनाए रखने हेतु अनिवार्य बताया गया है। इस शिविर में इन समस्त विधियों का शास्त्रीय आधार सहित, आचार्यों के निर्देशन में व्यवहारिक प्रशिक्षण दिया जाएगा, जिससे प्रतिभागी न केवल विधि को समझें, बल्कि उसे शुद्ध एवं सही रूप में अपने जीवन में आत्मसात् कर सकें। इस शिविर में सभी आयु के द्विज बंधु सादर आमंत्रित हैं। अतः आप सभी से निवेदन है कि इस पवित्र आयोजन में सहभागी होकर ज्ञान एवं संस्कारों को अपने जीवन में धारण करे।

॥ श्रीः ॥

वैदिक परम्परा संवर्धनार्थ

त्रिदिवसीय संध्यावंदन तथा यज्ञोपवीत– कुशपवित्री निर्माण

प्रशिक्षण शिविर

शिविर मुख्यतः निम्न बिंदुओं पर आधारित होगा –

- प्रथम दिवसः- संध्यावंदन विधि प्रशिक्षण
- द्वितीय दिवसः- यज्ञोपवीत निर्माण विधि
- तृतीय दिवसः- कुश पवित्री, मोटक, ब्रह्म कूर्च आदि निर्माण विधि

शिविर में सहभागिता के लिए **पंजीकरण अनिवार्य है,** कृपया संपर्क सूत्र तथा QR कोड स्केन कर पंजीकरण कराएं।

तिथिः- 22 से 24 मई 2026
समयः- सायं 5 से 7
स्थानः- चौरसिया धर्मशाला वाले श्री हनुमान मंदिर, मोदी की गली, उज्जैन
संपर्कः- 84354 02694 90090 19491

नोटः- सभी प्रतिभागी पारंपरिक धोती, उत्तरीय(अंगोछा) या कुर्ता धारण करके तथा पंचपात्र आचमनी तरभाना आसन एवं कॉपी पेन लेकर ही शिविर में पधारे।

आयोजकः-
श्री अनुष्ठानप्रिय मण्डली , सिंहपुरी उज्जैन

प्रतिनिधि बनें
रु. 2501/-
+ 11 नए सदस्य बनाएं
9303968612 | sanatantoday.in | dsansanews@gmail.com
रु.2501/-*
प्रतिनिधि बनें
आपको प्राप्त होगा
पारदर्शी एवं प्रभावी कार्य हेतु कानूनी अनुबंध
अधिकृत रूप से कार्य करने हेतु प्रमाण पत्र
परिचय पत्र-समाचार/वीडिया/ऑडियो/ अन्य सामग्री कवरेज हेतु फोटो परिचय पत्र एवं एनकरिंग माईक
समाचार/वीडियो/ऑडियो/अन्य सामग्री भेजने हेतु वेब पोर्टल का आईडी-पासवर्ड
प्रशासनीय एवं तकनीकी समन्वय हेतु 24X7 टीम
आपकी भूमिका, समाज और राष्ट्र के लिए महत्वपूर्ण
✓ धर्म, अध्यात्म और समाज सेवा के क्षेत्र में योगदान
✓ जनता की समस्याओं को उठाने का मंच
✓ सत्य, निष्पक्ष और निर्भीक पत्रकारिता को बढ़ावा
✓ अपने क्षेत्र में विश्वसनीय पहचान
✓ एक सशक्त मीडिया परिवार का हिस्सा बनें
भुगतान करे
punditrkjoshi@oksbi
9303968612@upi

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक, अखिलेश जोशी द्वारा 34, भोज मार्ग फ्रीगंज उज्जैन से प्रकाशित कर एवं भगवती ऑफसेट, 44, बहादुरगंज, उज्जैन (म.प्र.) से मुद्रित, संपादक - गिरजा मो. न. 9303968612 (सभी विवादो का न्याय क्षेत्र उज्जैन रहेगा)